ए. पी. एस. एम. कॉलेज, बरौनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

हिन्दी विभाग, स्नातक प्रथम वर्ष(प्रथम पत्र)

सत्र-2020-2023

डॉ. मेनका कुमारी

कबीर जीवनवृत्त-

- कबीर का जीवनवृत्त विवादास्पद है। कबीर के समय निर्धारण के लिए उपलब्ध सामग्री को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। 1 अंतर्साक्ष्य 2 साम्प्रदायिक सामग्री 3 प्राचीन ग्रंथों एवं विद्वानों के अभिमत।

- अंतर्साक्ष्य की दृष्टि से कबीर ने केवल दो प्रसंगों-काजी द्वारा हाथी चलवाने तथा लोहे की जंजीरों से बंधवाकर गंगा में डुबोने के प्रयत्न का वर्णन किया है। **सिकंदर लोदी(1488-1517)** द्वारा किए गए अत्याचारों का वर्णन **अनंतदास** कृत '**कबीर परिचई**' में मिलता है। कबीर ने अपने ग्रंथों में जयदेव और नामदेव की महत्ता का वर्णन किया है। इन दोनों संतों का समय 12 वीं से 13 वीं शताब्दी है।

- साम्प्रदायिक सामग्री में श्री पीपा की वाणी भवतारण(धर्मदास), कबीर गोरख-गुष्ट, कबीर-चरित्र बोध, भक्तमाल, कबीर परिचई प्रमुख ग्रंथ हैं। 'कबीर-चरित्र बोध' में इनका आविर्भाव काल ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा, सोमवार संवत 1455 अर्थात 1398 ई स्पष्ट शब्दों में घोषित है-

चौदह सौ पचपन साल गये चंद्रवार एक ठाठ ठये।

जेठ सुदी बरसाइत को पूरनमासी तिथि प्रकट भये।

- भक्तमाल के टीकाकार **प्रियादास** के अनुसार उनका देहावसान मगहर में 1492 ई. में हुआ। कबीरपंथी ग्रंथ **'कबीर कसौटी'** में एक दोहा दिया है जिसके अनुसार कबीर का निधन 1575 वि अर्थात 1518 ई. में हुआ। इस तिथि के अनुसार कबीर की आयु(1398-1518 ई.) 120 वर्ष रही। इसी अवस्था का उल्लेख 'कबीर परिचई' में भी है।

- कबीरदास का जन्म **काशी** में हुआ था। वे जाति के जुलाहा थे जिसका उल्लेख स्वयं कबीर ने **'जाति जुलाहा** नाम कबीर' कहकर किया है। **'भक्तमाल'** के अनुसार कबीर रामानंद के प्रुख शिष्य थे। किंवदंती के अनुसार उनका जन्म विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ। उनका लालन पालन **नीरू और नीमा** नामक पुत्रहीन दंपत्ति ने किया। जनश्रुति है कि कबीर की पत्नी का नाम **लोई** और पुत्र का नाम **कमाल तथा पुत्री कमाली** थी। कुछ लोग लोई को कबीर की शिष्या भी बताते हैं। कबीर की मृत्यु **मगहर** में हुई थी।

- रचनाएँ-**'मसि कागद छुयो नहीं, कलम गह्यो नहीं हाथ'** कहने वाले कबीर ने किसी भी ग्रंथ को स्वयं लिपिबद्ध नहीं किया। उनके कथन मौखिक ही हुआ करते थे। कबीर की वाणी का संग्रह **'बीजक'** नाम से प्रसिद्ध है। कबीर के शिष्य **धर्मदास** ने 1464 ई में इस नाम से संग्रह किया। बीजक के तीन भाग हैं- **1 साखी 2 सबद 3 रमैनी**। साखी- के भीतर साम्प्रदायिक शिक्षा और सिद्धांत के उपदेश हैं। साखी-**साक्षी** शब्द का अपभ्रंश रूप है। **'सबद'** गेय पद हैं। **रमैनी** को रामणी या रामायण का बिगड़ा हुआ रूप माना गया है।

कबीर की भक्ति भावना-

- 1 निर्गुण
- 2 भारतीय वेदान्त के अद्वैतवाद
- 3 सूफी प्रेमतत्त्व
- 4 वैष्णवों की अहिंसा
- 5 हठयोगियों के साधनात्मक रहस्यवाद
- अर्थात उनकी भक्ति अनेक पंथों का मिश्रण थी।

- परमात्मा की एकता-कबीर का ईश्वर घट-घट में व्यापी है। वह हिन्दुओं के बहुदेववाद और मुसलमानों के एकेश्वरवाद से भिन्न है। कबीर ऐसे ब्रह्म को स्थापित करते हैं जो अनाम, निराकार और निर्गुण है। इन्होंने एकता पर बल दिया है।
- 1 जल में कुंभ कुंभ में जलहै, बाहर भीतर पानी।
- फूटा कुंभ जल जलहि समाना, यह तथ कथो गियानी।
- 2 कस्तूरी कंडल बसै, मृग ढूंढ़े बन माहि
- ऐसे घटि-घटि राम हैं, दुनियां देखे नाहिं।

प्रेम तत्व की प्रधानता-

- संयोग- दुलहिन गावहू मंगलचार।
  हम घरि आये हो राजा राम भरतार।
  तन रत करि मैं मन रति करिहूं पंच तत्व बराती
  रामदेव मोरै पाहुनैं आये मैं जोबन मैं माती।
- वियोग-
  1 बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम।
  जिव तरसै तुझ मिलन कूँ, मन नहीं विश्राम।

  2 आंखड़िया झांई पड़ी पंथ, निहारि रिहारि
  जिभड़िया छाला पड़ा राम पुकारि पुकारि।।

नाम-स्मरण-

- कबीर नाम को ब्रह्म मानते हैं। अतः उन्होंने नाम-स्मरण का अति विस्तार से वर्णन किया है। कबीर के मत में नाम-स्मरण हृदय से होना चाहिए। होठों से वह निकले या न निकले, पर अंग-अंग में व्याप्त हो जाए।

  तूं तूं करता तूं भया, मुझमें रही न हूं।
  बारी फेरी बलि गयी, जित देखूं तित तूं।

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख मांहि।
मनुवा तो दस दिसि फिरै, सो◌े तो सुमिरन नाहिं।

- गुरु महिमा का वर्णन-

- मध्यम मार्ग का अनुसरण-

- आचरण की शुद्धता

- वैष्णव तत्व की प्रधानता
- हठयोगियों के साधनात्मक रहस्यवाद का मिश्रण
- कबीर के दार्शनिक विचार-
- कबीर का रहस्यवाद
- कबीर का काव्यत्व-
- भाव पक्ष-
- कलापक्ष-
- कबीर की भाषा-